रूसी परी कथा

मुझे नहीं पता कि मैं कहां जा रहा हूँ, और मैं क्या लाने जा रहा हूँ

चित्र: एन. कोचेरगिन

हिंदी: अरविन्द गुप्ता
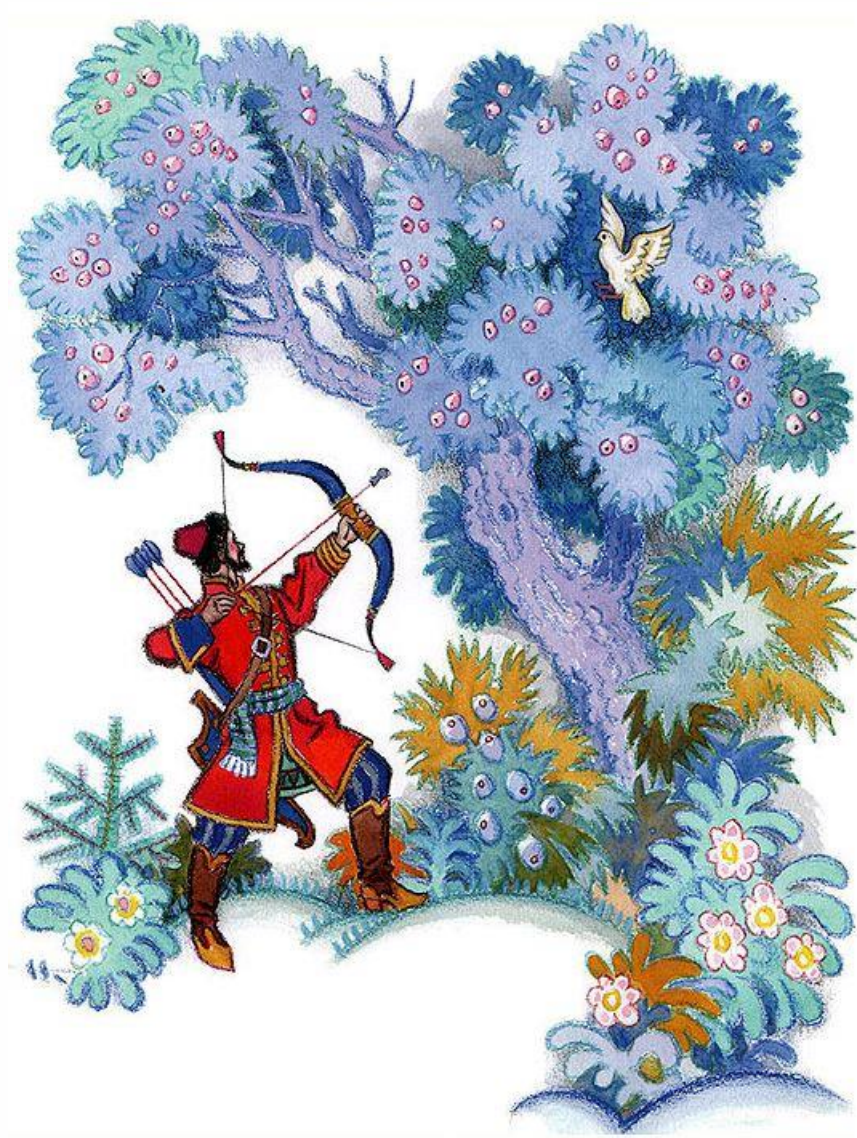
किसी राजघराने में एक राजा था. वह अकेला आदमी था, अविवाहित, और उसकी सेवा में आंद्रेई नाम का एक तीरंदाज़ था.

एक दिन तीरंदाज़ शिकार करने निकला. वह पूरे दिन जंगल में भटकता रहा, लेकिन कोई शिकार उसके हाथ नहीं लगा. देर हो रही थी, इसलिए उसने थका हुआ और उदास महसूस करते हुए, अपने घर की ओर रुख किया. अचानक उसकी नज़र एक पेड़ पर बैठे एक कबूतर पर पड़ी.

"मेरे पास उसे मारने का यह एक मौका है," उसने सोचा.

इसलिए उसने कबूतर को गोली मारी और उसे चोट लगी, और वह पेड़ से नम धरती पर गिर गया. आंद्रेई ने उसे उठाया और वो उसकी गर्दन मरोड़कर अपनी थैली में रखने ही वाला था कि तभी पक्षी ने मानवीय आवाज़ में उससे कहा:

"मुझे मत मारो, शिकारी आंद्रेई, मेरी बेचारी गर्दन को मत मरोड़ो. मुझे जिंदा घर ले जाओ और खिड़की में रख दो. लेकिन देखो, जैसे ही मैं ऊंघने लगूं, वैसे ही मुझे अपने दाहिने हाथ से थप्पड़ मारना, और फिर तुम्हें एक महान सौभाग्य प्राप्त होगा."

तीरंदाज़ आंद्रेई को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ.

"यह बड़ी अजीब बात है?" उसने सोचा. "यह पक्षी किसी भी अन्य पक्षी की तरह ही दिखता है, फिर भी वह इंसान की आवाज़ में बोलता है."

वह कबूतर को घर ले गया, उसे खिड़की पर रख दिया और फिर इंतजार करने लगा.

धीरे-धीरे कबूतर ने अपना सिर अपने पंख के नीचे छिपा लिया और झपकी लेने लगा, और तभी आंद्रेई ने, जो कुछ उसे बताया गया था उसे न भूलते हुए, अपने दाहिने हाथ से पक्षी को थप्पड़ मारा. कबूतर फर्श पर गिर गया और त्सरेवना मारिया नाम की एक गोरी युवती में बदल गया. वो भोर के समय आकाश की तरह गोरी, और अब तक पैदा हुई सबसे सुंदर युवती थी.

राजकुमारी मारिया ने तीरंदाज़ से कहा:

तुमने मुझे पकड़ लिया है, अब मुझे रखने का प्रबंध भी करो. खुशनसीब है ऐसा रिझाना जो लंबे समय तक न चले. मुझसे शादी करो और फिर मैं तुम्हारी एक वफादार और हँसमुख पत्नी बनूंगी."
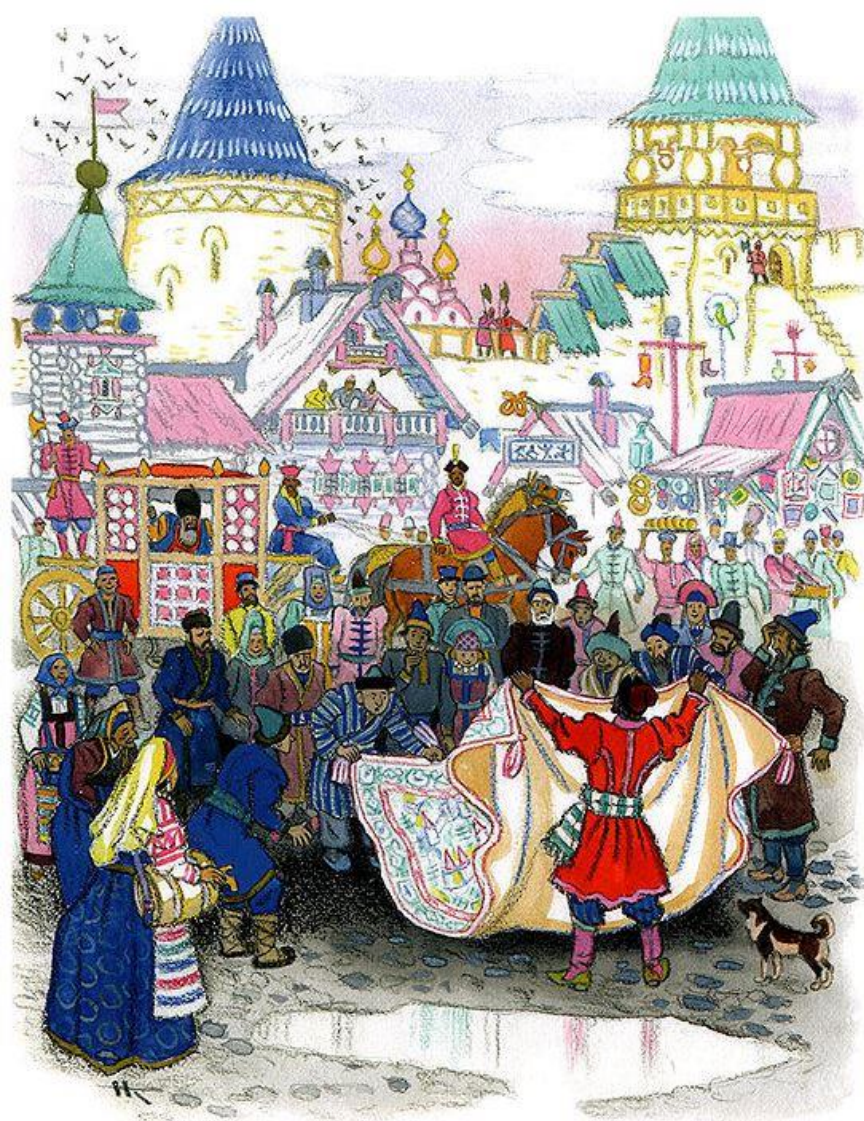
और इस तरह मामला सुलझ गया. आंद्रेई तीरंदाज़ ने त्सरेवना मारिया से शादी की. वह और उसकी युवा पत्नी एक-साथ बहुत खुश थे. परंतु उन्होंने अपने कर्तव्यों की उपेक्षा नहीं की. हर सुबह पौ फटने से पहले वह जंगल जाता, जंगली मुर्गों को मारता और उन्हें ज़ार की रसोई में ले जाता. और इस तरह यह कुछ समय तक चलता रहा, जब तक कि एक दिन त्सरेवना मारिया ने नहीं कहा:

"हम लोग बहुत गरीब हैं, आंद्रेई."

"मुझे डर है कि हम गरीब हैं."

"यदि तुम सौ रूबल उधार लो और उससे मेरे लिए रेशम खरीदो, तो फिर मैं देखूंगी कि हमारा जीवन कैसे बेहतर बन सकता है."

आंद्रेई ने वैसा ही किया जैसा मारिया ने उससे कहा. वह अपने दोस्तों के पास गया, एक रूबल यहाँ से उधार लिया, दो वहाँ से, और फिर उन पैसों से उसने रेशम खरीदा. वह रेशम अपनी पत्नी के पास लाया, और मारिया ने वो ले लिया और कहा:

"अब सो जाओ, रात सलाह की जननी होती है."

आंद्रेई बिस्तर पर चला गया, और त्सरेवना मारिया बुनाई करने बैठ गईं. सारी रात वह बुनाई करती रही और उसने ऐसा गलीचा बनाया जैसा दुनिया ने पहले कभी नहीं देखा था. उस पर संपूर्ण राजशाही, उसके सभी नगर और गाँव, उसके जंगल और खेत, आकाश में पक्षी, जंगल में जानवर, समुद्र की मछलियाँ और उस पर चमकते चाँद और सूरज का चित्रण किया गया था.

सुबह राजकुमारी मारिया ने अपने पति को गलीचा दिया और कहा:

"इसे व्यापारियों के पास ले जाओ और बेच दो, लेकिन अपनी कीमत खुद मत बताना. वे तुम्हें जो कुछ भी दें, वो ले लेना."

आंद्रेई ने गलीचा लिया, उसे अपनी बांह पर लटकाया और व्यापारियों के पास चला गया.

तभी एक व्यापारी दौड़कर उसके पास आया और बोला:

"तुम्हें गलीचे के लिए कितना चाहिए, मेरे अच्छे आदमी?"

"आप एक व्यापारी हैं, आप अपनी कीमत खुद बताएं."
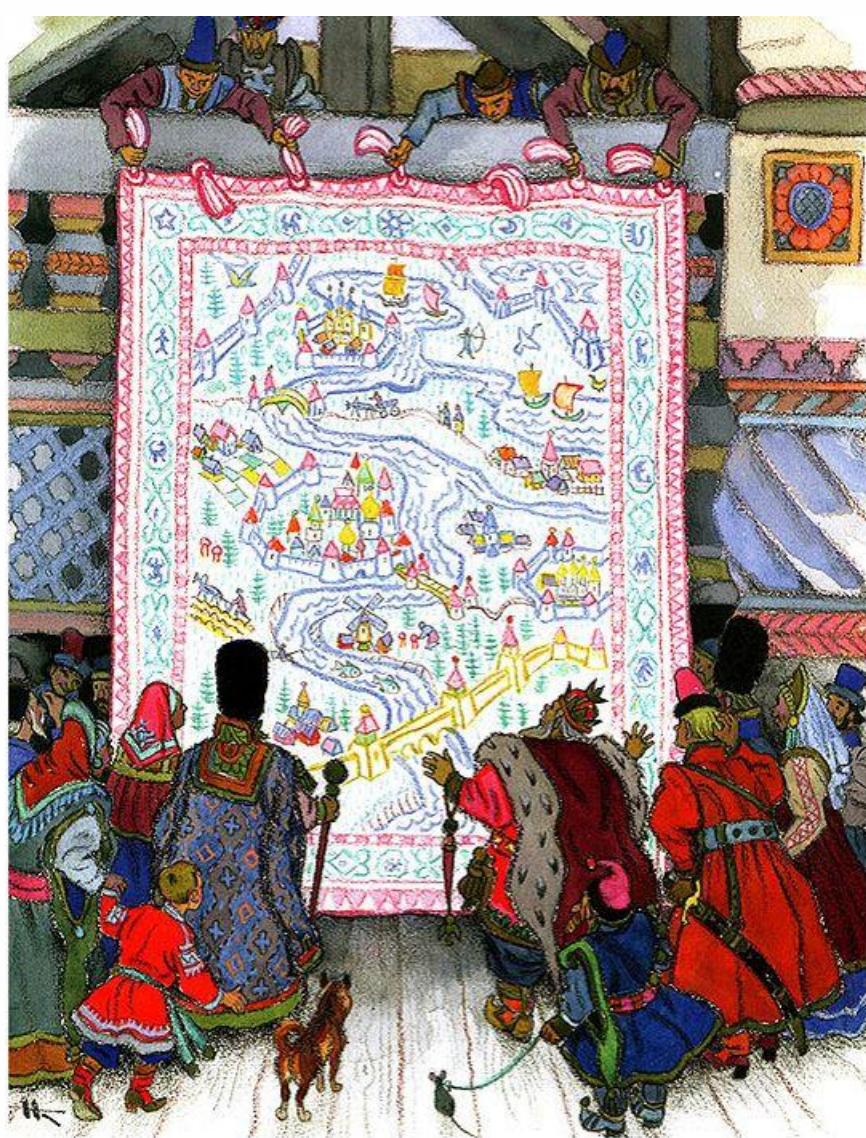
व्यापारी ने सोचा-विचारा, लेकिन वह गलीचे का मूल्य नहीं आंक सका. फिर एक और आया, और उसके बाद एक और और फिर एक और. देखते-ही-देखते वहां पूरी भीड़ जमा हो गई. उन सभी ने गलीचे को देखा और आश्चर्यचकित रह गए, लेकिन कोई भी उसकी कीमत नहीं बता सका.

तभी ज़ार का पार्षद वहां से गुज़रा, और उसने अचरज किया कि वहां इतनी भीड़ क्यों लगी थी. वह अपनी गाड़ी से बाहर निकला, भीड़ के बीच में घुसते हुए बोला:

"नमस्कार, दूर देशों और निकट के व्यापारियों, यहाँ क्या हो रहा है?"

उन्होंने कहा, "हम इस गलीचे की कीमत नहीं आंक पा रहे हैं."

ज़ार के पार्षद ने गलीचे को देखा और वो खुद आश्चर्यचकित रह गया.

"अब मुझे सच बताओ तीरंदाज़, तुम्हें यह अद्भुत गलीचा कहाँ से मिला?" उसने पूछा.

"मेरी पत्नी ने इसे बनाया है," तीरंदाज़ ने कहा.

"और तुम इसके लिए कितना चाहते हो?"

"मुझे नहीं पता. मेरी पत्नी ने कहा कि मुझे जो भी मिले, मुझे वो स्वीकार करना चाहिए."

"तो ये रहे दस हजार रूबल, तीरंदाज़."

आंद्रेई ने पैसे लिए, गलीचा सौंप दिया और घर चला गया. और ज़ार का पार्षद महल में गया और ज़ार को गलीचा दिखाया.

ज़ार ने देखा, और वह आश्चर्यचकित यह गया, क्योंकि उसकी आंखों के सामने उसकी पूरी ज़ारशाही थी. इससे उसकी सांसें थम गईं!

"तुम्हें जो पसंद है खरीदो, लेकिन मैं तुम्हें यह गलीचा कभी वापस नहीं दूंगा," ज़ार ने कहा.

ज़ार ने बीस हजार रूबल निकाले और अपने पार्षद को दिए, और पार्षद ने पैसे ले लिए और सोचा:

"उससे कोई फर्क नहीं पड़ता है, मैं अपने लिए एक और, उससे भी बेहतर गलीचा बनवा लूंगा."
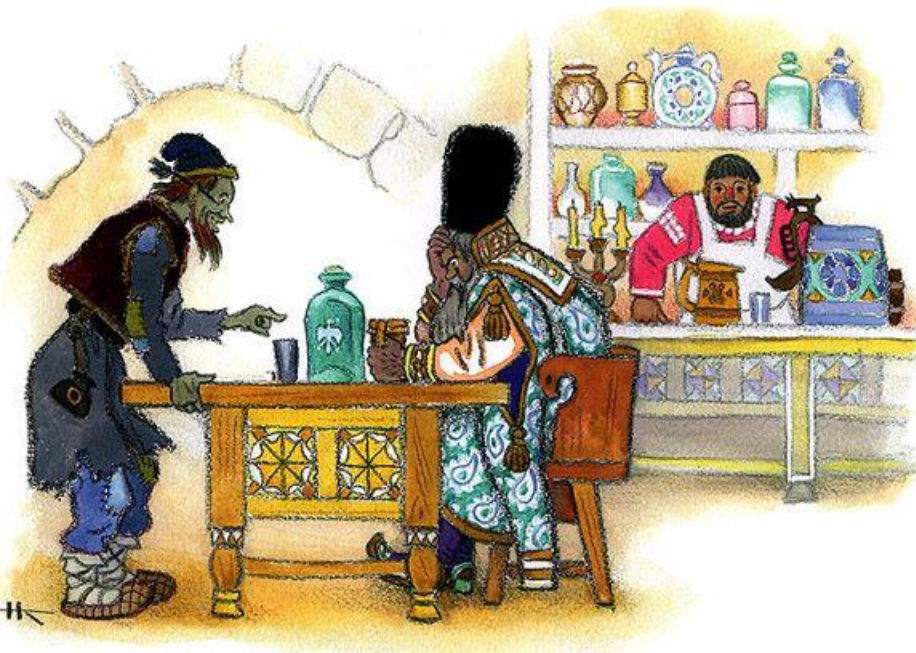
वह फिर से अपनी गाड़ी में बैठा और शहर के बाहरी इलाके में चला गया. उसे वह झोपड़ी मिली जिसमें आंद्रेई तीरंदाज़ रहता था और उसने दरवाजा खटखटाया. त्सरेवना मारिया ने दरवाज़ा खोला, और ज़ार के पार्षद ने एक पैर दहलीज पर रखा, लेकिन उसका दूसरा पैर हवा में ही लटका रहा. उसकी जुबान फिसल गई और वह भूल गया कि वह वहां किसलिए आया था. उसके सामने एक इतनी खूबसूरत औरत खड़ी थी कि वह हमेशा के लिए उस पर अपनी नजरें जमा सकता था.

त्सरेवना मारिया ने उसके बोलने का इंतजार किया, और जब वह नहीं बोला, तो उसने उसे बाहर धकेल दिया और उसके पीछे दरवाजा बंद कर दिया. थोड़ी देर बाद उसे बात समझ आई और वो घर चला गया. लेकिन उस दिन के बाद से वह तीरंदाज़ की पत्नी के बारे में ही सोचता रहा. वो न तो कुछ खा सका और न ही कुछ पी सका.

ज़ार ने देखा कि उसका पार्षद पहले जैसा नहीं था और उसने उसका कारण पूछा. पार्षद ने कहा:

"आह, महामहिम, मैंने तीरंदाज़ की पत्नी को देखा है और मैं उसे अपने दिमाग से निकाल नहीं पा रहा हूँ. उसने मुझे वास्तव में मोहित कर लिया है, और मैं उस जादू को तोड़ने के लिए कुछ नहीं कर पा रहा हूँ."

उसके बाद ज़ार भी तीरंदाज़ की पत्नी पर एक नज़र डालने के लिए उत्सुक हो गया. उसने सामान्य कपड़े पहने, शहर के बाहरी इलाके में गया, उस झोपड़ी को पाया जिसमें आंद्रेई तीरंदाज़ रहता था और दरवाजा खटखटाया. त्सरेवना मारिया ने दरवाज़ा खोला, और ज़ार ने एक पैर दहलीज के ऊपर रखा, लेकिन उसका दूसरा पैर हवा में ही लटका रहा. वह वहाँ खड़ा रहा और वह आश्चर्य से गूंगा हो गया क्योंकि उसने पहले कभी किसी इतनी सुंदर महिला को नहीं देखा था!

त्सरेवना मारिया ने ज़ार के बोलने का इंतज़ार किया, और जब वह नहीं बोला, तो उसने उसे बाहर धकेल दिया और उसके बाद दरवाज़ा बंद कर दिया.

ज़ार को यह बहुत बुरा लगा.

"मैं अकेले क्यों रहूँ?" उसने कहा, "यहाँ मेरे लिए एक प्यारी दुल्हन है. वह एक ज़ार की पत्नी होनी चाहिए एक तीरंदाज़ की नहीं."

ज़ार अपने महल में वापस गया, फिर उसके दिमाग में एक दुष्ट योजना आकार लेने लगी: एक जीवित पति से उसकी पत्नी को चुराने की. उसने अपने पार्षद को बुलाया और कहा:

“आंद्रेई तीरंदाज़ से छुटकारा पाने का कोई तरीका सोचो. मैं उसकी पत्नी से शादी करना चाहता हूं. यदि तुम मेरी सहायता करोगे, तो मैं तुम्हें एक शहर, गाँव और सोना इनाम में दूँगा, परन्तु यदि तुम वो नहीं करोगे, तो मैं तुम्हारा सिर कटवा डालूँगा.”

ज़ार का पार्षद अत्यंत परेशान हुआ. वह तीरंदाज़ से छुटकारा पाने का कोई रास्ता नहीं सोच सका, और इसलिए, उदास और निराश होकर, वह शराब में अपने दुःख को डुबाने के लिए एक शराबखाने में चला गया.

फटे-पुराने कफ्तान में एक शराबख़ाना में बार-बार आने वाला एक शराबी उसके पास आया और बोला:

"तुम इतने उदास क्यों दिख रहे हैं. ज़ार के पार्षद? ऐसा क्या है जो तुम्हें परेशान कर रहा है?"

"तुम अपना काम देखो, बेवक़ूफ़!"

"बेहतर होगा कि तुम मेरे लिए शराब का एक प्याला खरीद दो फिर मैं तुम्हें कुछ अच्छी सलाह दूँगा."

ज़ार के पार्षद ने उसे एक गिलास शराब दी और उसे अपनी परेशानी बताई.

"आंद्रेई तीरंदाज़ एक साधारण व्यक्ति है." शराबी ने कहा, "अगर उसकी पत्नी इतनी चतुर न होती तो उससे छुटकारा पाना आसान होता. हमें कुछ ऐसा सोचना चाहिए जो उसे भी चकित कर दे. मुझे विश्वास है कि मुझे पता है कि हमें क्या करना होगा. वापस जाओ और ज़ार से कहो कि वह आंद्रेई तीरंदाज़ को दूसरी दुनिया में भेज दे यह पता लगाने के लिए कि उसके मृत पिता, बूढ़े ज़ार, वहां क्या कर रहे हैं. इस प्रकार आंद्रेई चला जाएगा और फिर वो कभी वापस नहीं लौटेगा."

ज़ार के पार्षद ने शराबी को धन्यवाद दिया और वापस ज़ार के पास भागा.

"मैंने तीरंदाज़ से छुटकारा पाने का एक तरीका सोच लिया है," उसने कहा, और उसने ज़ार को बताया कि उन्हें क्या करना चाहिए.

ज़ार बहुत प्रसन्न हुआ और उसने तुरंत आंद्रेई तीरंदाज़ को बुलावाया.

"ठीक है, आंद्रेई," उसने कहा, "तुमने ईमानदारी से मेरी सेवा की है, लेकिन एक और सेवा है जो मुझे तुमसे चाहिए. तुम दूसरी दुनिया में जाओ और पता करो कि मेरे पिताजी कैसे हैं. यदि तुम नहीं करोगे, तो मैं अपनी तलवार निकालकर तुम्हारा सिर काट दूंगा."

आंद्रेई घर चला गया. वह बेंच पर बैठ गया और उदासी से उसका सिर लटक गया.

"तुम इतने उदास क्यों हो, आंद्रेई?" त्सरेवना मारिया ने पूछा.

आंद्रेई ने उसे बताया कि ज़ार उससे क्या करवाना चाहता था.

“चिंता की क्या बात है!” त्सरेवना मारिया ने कहा. "यह एक मामूली काम; असली काम तो अभी बाकी है. सो जाओ क्योंकि रात सलाह की जननी होती है."

अगली सुबह, जैसे ही आंद्रेई उठा, त्सरेवना मारिया ने उसे बिस्कुट का एक बैग और एक सोने की अंगूठी दी.

"ज़ार के पास जाओ और उससे कहो कि वह तुम्हें पार्षद को अपने साथ ले जाने दे, ताकि ज़ार को पता चले कि तुम सचमुच दूसरी दुनिया में गए थे. जब तुम अपने साथी के साथ निकलो, तो अंगूठी अपने सामने फेंक देना और वह तुम्हें रास्ता दिखाएगी."

आंद्रेई ने बिस्कुट का बैग और अंगूठी ली, अपनी पत्नी को अलविदा कहा और ज़ार से अपने पार्षद को उसके साथ भेजने को कहा. ज़ार मना नहीं कर सका, और उसने पार्षद को आंद्रेई के साथ जाने का आदेश दिया. दोनों ने एक साथ यात्रा की शुरुआत की, आंद्रेई ने अंगूठी नीचे फेंक दी और वह लुढ़कने लगी. उसने खुले मैदानों और काई भरे दलदलों से होते हुए, झीलों और नदियों के पार अंगूठी का पीछा किया और उसके पीछे ज़ार का पार्षद भी चला. जब भी वे चलते-चलते थक जाते तो कुछ बिस्कुट खा लेते और फिर चल पड़ते.

कोई नहीं जानता कि वे बहुत देर तक चले या थोड़ी देर तक, लेकिन धीरे-धीरे वे एक बड़े, घने जंगल में पहुँच गए. वे एक गहरे खड्ड में उतर गये और वहाँ पर जाकर अंगूठी रुक गयी.

आंद्रेई और ज़ार का पार्षद कुछ बिस्कुट खाने के लिए बैठ गए. और वे किसे देखते, सिवाय इसके कि एक लड़खड़ाता हुआ बूढ़ा राजा जलाऊ लकड़ी की गाड़ी खींच रहा था, और वह एक भारी बोझ था, जबकि दो शैतान, एक उसके दाहिनी ओर, दूसरा उसकी बाईं ओर, उसे लाठियों से हांकते हुए आगे बढ़ा रहे थे.

''उधर देखो.'' आंद्रेई ने कहा, ''क्या वह ज़ार का मृत पिता नहीं है?''

"हाँ, वो सचमुच में ज़ार के पिता ही है," पार्षद ने कहा.

"नमस्कार, सज्जनों!" आंद्रेई शैतानों पर चिल्लाया. "उस बूढ़े पापी को एक मिनट के लिए छोड़ दो, ज़रा मुझे उससे कुछ बात करनी है."

"क्या आपको लगता है कि हमारे पास खड़े होकर इंतज़ार करने का समय है?" शैतानों ने उत्तर दिया. "या क्या आप हमसे उम्मीद करते हैं कि हम स्वयं लकड़ी की गाड़ी खींचेंगे?"

आंद्रेई ने कहा, "मेरे पास यहां एक आदमी है जो उस बूढ़े की जगह ले सकता है."

इसलिए शैतानों ने बूढ़े ज़ार को उतार दिया और उसके स्थान पर पार्षद को गाड़ी में हाँक दिया. उन्होंने उस पर अपनी लाठियों से प्रहार किया, एक बायीं ओर, दूसरा दायीं ओर, और पार्षद दो बार झुका लेकिन जितना हो सका उसने खींचा.

आंद्रेई ने बूढ़े ज़ार से पूछा कि उसका जीवन कैसा चल रहा था.

"आह, तीरंदाज़ आंद्रेई," ज़ार ने कहा, "मैं दूसरी दुनिया में बहुत बुरा समय बिता रहा हूँ. मेरे बेटे को मेरी याद दिलाओ और उससे कहो कि वह लोगों के साथ बुरा व्यवहार न करे, अन्यथा उसका भी यहां पहुंचने पर यही हाल होगा."

उन्होंने अभी बात ख़त्म ही की थी कि शैतान खाली गाड़ी लेकर वापस आ गए. आंद्रेई ने बूढ़े ज़ार से विदा ली, पार्षद फिर उसके साथ हो लिया और वे घर के लिए निकल पड़े.

धीरे-धीरे वे राजमहल में पहुंचे और महल में गये. जब ज़ार ने तीरंदाज़ को ज़िंदा देखा तब वह गुस्से से पागल हो गया.

"तुम्हारी वापस आने की हिम्मत कैसे हुई!" वह चिल्लाया.

"मैंने आपके मृत पिता को दूसरी दुनिया में देखा है. वह वहां बहुत बुरा समय बिता रहे हैं." तीरंदाज़ ने कहा, "वह आपको अपनी शुभकामनाएं भेजते हैं और कहते हैं कि यदि आप उनके जैसा बुरा समय नहीं बिताना चाहते हैं तो आपको लोगों के साथ दुर्व्यवहार नहीं करना चाहिए."

"और तुम यह कैसे साबित करोगे कि तुम दूसरी दुनिया में गए थे और तुम मेरे पिताजी से मिले थे?"

"मैं वो पार्षद की पीठ पर शैतानों की लाठियों द्वारा छोड़े गए निशानों से साबित कर सकता हूँ."

यह पर्याप्त सबूत था, इसलिए ज़ार को आंद्रेई को जाने देना पड़ा - वह भला और क्या कर सकता था?

फिर ज़ार ने अपने पार्षद से कहा:

"यदि तुम तीरंदाज़ से छुटकारा पाने का कोई उपाय नहीं सोचते हो, तो मैं अपनी तलवार लेकर तुम्हारा सिर काट दूंगा."

पार्षद पहले से भी ज्यादा परेशान हुआ. वह शराबखाने में गया, एक मेज पर बैठ गया और उसने शराब मंगवाई. तभी वही शराबी उसके पास आया और बोला:

"तुम्हें इतना दु:ख क्यों हो रहा है. ज़ार के पार्षद? ऐसा क्या है जो तुम्हें परेशान कर रहा है? मेरे लिए एक शराब का प्याला खरीदो और मैं तुम्हें कुछ अच्छी सलाह दूँगा."

पार्षद ने उसे शराब का गिलास दिया और उसे अपनी परेशानी बताई.

"चिंता मत करो," शराबी ने कहा. "वापस जाओ और ज़ार से कहो कि तीरंदाज़ उसकी यह सेवा करे - एक ऐसी चीज़ जिसके बारे में सोचना मुश्किल है, करने की तो बात ही छोड़ दो, उसे थ्रीस-नाइन लैंड्स से आगे थ्रीस-टेन ज़ारडोम तक जाना होगा और क्रून-कैट को लाना होगा."

पार्षद ज़ार के पास भागा और उसे बताया कि तीरंदाज़ से कैसे छुटकारा पाया जाए. ज़ार ने तुरंत आंद्रेई को बुलाया.

"ठीक है, आंद्रेई, तुमने मेरी एक सेवा की है, अब मेरी दूसरी सेवा भी करो," उन्होंने कहा. "थ्रिस-नाइन लैंड्स से आगे थ्रीस-टेन ज़ारडोम तक जाओ और मेरे लिए क्रून-कैट लेकर आओ. यदि तुम वह नहीं करोगे तो मैं अपनी तलवार से तुम्हारा सर काट दूंगा."

आंद्रेई सिर झुकाए घर गया और उसने अपनी पत्नी को बताया कि ज़ार ने उसे क्या काम सौंपा था.

“चिंता की क्या बात है!” त्सरेवना मारिया ने कहा. "यह एक मामूली काम है, असली काम तो अभी बाकी है. सो जाओ; रात सलाह की जननी होती है."

आंद्रेई सोने चला गया, और त्सरेवना मारिया लोहार के पास गई और उसने लोहार से कहा कि वे तीन लोहे की टोपी, एक जोड़ी लोहे की चिमटा और तीन छड़ें बनाएं - एक लोहे की, दूसरी तांबे की, और तीसरी टिन की.

अगली सुबह राजकुमारी मारिया ने आंद्रेई को जगाया.

"यहां तीन टोपियां, चिमटा की एक जोड़ी और तीन छड़ें हैं - थ्राइस-नाइन लैंड्स से आगे थ्राइस-टेन ज़ारडोम तक जाओ. उससे तीन मील कम दूरी पर, तुम्हें बहुत नींद आएगी – क्योंकि क्रून-कैट अपना जादू करेगी. लेकिन तुम ध्यान रखना और सोना मत. अपने हाथ मोड़ना, अपने पैर खींचना, और यदि आवश्यक हो, तो जमीन पर लोटना. यदि तुम सो गए, तो क्रून-कैट तुम्हें मार डालेगा."

उसने तीरंदाज़ को बताया कि उसे क्या करना है और कैसे करना है. फिर त्सरेवना मारिया ने उसे उसके काम के लिए विदा किया.

कहानी बताने में छोटी है, लेकिन काम लंबा है. आंद्रेई तीरंदाज़ आख़िरकार थ्रिस-टेन ज़ारडोम के पास आया, और उससे तीन मील पहले ही उसे नींद आने लगी. उसने तीन लोहे की टोपियाँ अपने सिर पर रखीं, अपने हाथ मोड़े, अपने पैर खींचे, और जब किसी और चीज से मदद नहीं मिली, तो जमीन पर लोट गया.

किसी तरह वह जागने में कामयाब रहा और खुद को एक ऊंची चौकी पर पाया.

जब क्रून-कैट ने आंद्रेई को देखा तो वह गुर्राने लगी और खंभे से सीधे उसके सिर पर कूद गई. उसने पहली टोपी तोड़ दी, उसने दूसरी भी तोड़ दी, और तीसरी तोड़ने जा रही थी जब आंद्रेई ने उसे चिमटे से पकड़ लिया, उसे जमीन पर खींच लिया और छड़ों से उसे कुचलने के लिए कूद पड़ा. पहले उसने उसे लोहे की रॉड से पीटा; जब लोहे की छड़ टूट गई तो उसने उसे तांबे की छड़ से कोड़े मारे; और जब ताँबे की छड़ टूट गई, तो उस ने टीन से उसके चारों ओर पीटकर लिटा दिया.

टिन की छड़ मुड़ गई लेकिन टूटी नहीं - वह केवल उसके शरीर के चारों ओर घूम गई. जैसे ही आंद्रेई ने उसे कोड़े मारे, क्रून-कैट ने उसे पुजारियों, उपयाजकों और पुजारियों की बेटियों के बारे में परियों की कहानियाँ सुनाईं. लेकिन आंद्रेई ने उन्हें अनसुना कर दिया और पूरी ताकत से उसे कोड़े मारता रहा.

यह क्रून-कैट की क्षमता से कहीं अधिक था, और, यह देखकर कि उसका दुष्ट जादू काम नहीं कर रहा था, वह उससे विनती करने लगी.

"मुझे जाने दो, हे अच्छे और दयालु आदमी!" उसने कहा. "तुम जो कहोगे मैं वही करूंगी."

"क्या तुम मेरे साथ चलोगी?"

"कहीं भी जहाँ भी तुम्हें पसंद हो."

आंद्रेई घर की ओर मुड़ा और बिल्ली को अपने साथ ले गया. जब वह अपने राजा के पास पहुंचा तो वह बिल्ली के साथ महल में गया और राजा से कहा:

"मैंने वही किया जो आपने मुझसे करने को कहा था और मैं क्रून-कैट को आपके पास लाया हूं."

ज़ार को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ.

"आओ, क्रून-कैट, मुझे आग और रोष दिखाओ," उन्होंने कहा.

इस पर बिल्ली ने अपने पंजों को तेज़ करना शुरू कर दिया और ज़ार की ओर घूरने लगी, और ऐसा करने लगी जैसे कि उसकी छाती को चीर कर उसमें से जीवित हृदय को फाड़ देगी. ज़ार भयभीत हो गया.

"उसे शांत करो, आंद्रेई," ज़ार ने कहा.

आंद्रेई ने बिल्ली को चुप कराया और उसे एक पिंजरे में बंद कर दिया, और फिर वह मारिया के पास घर गया. वे दोनों खुशी-खुशी एक साथ रहने लगे, लेकिन ज़ार अब पहले से कहीं अधिक अपने प्यार में पागल हो रहा था. एक दिन उसने अपने पार्षद को फिर से बुलाया.

ज़ार ने कहा, "तुम्हें आंद्रेई तीरंदाज़ से छुटकारा पाने के लिए कोई अन्य तरीका सोचना चाहिए. यदि तुम ऐसा नहीं करोगे तो मैं अपनी तलवार से तुम्हारा सिर काट दूंगा."

पार्षद सीधे शराबखाने में गया, उसने शराबी की तलाश की, और उसे अपनी परेशानी से बाहर निकालने में मदद करने के लिए कहा. शराबी ने अपना शराब का गिलास फेंक दिया, अपनी मूंछें पोंछीं और कहा:

"जाओ और ज़ार से कहो कि आंद्रेई तीरंदाज़ को जाने दे, मुझे नहीं पता कि वह कहाँ जाएगा और मुझे नहीं पता कि वह क्या लेकर आएगा. आंद्रेई यह कार्य कभी पूरा नहीं कर पाएगा, और इसलिए वह कभी वापस नहीं आएगा."

पार्षद भागकर ज़ार के पास गया और उसे सब कुछ, शब्दशः बता दिया. ज़ार ने आंद्रेई को बुलाया.

"तुमने मेरी दो सेवाएँ की हैं, अब मेरी तीसरी सेवा भी करो." ज़ार ने कहा, "जाओ, मैं नहीं जानता कि तुम कहां जाओगे और तुम क्या लेकर आओगे, मुझे वह भी नहीं पता. यदि तुम ऐसा करोगे, तो मैं तुम्हें अच्छा इनाम दूँगा, यदि तुम ऐसा नहीं करोगे, तो मैं अपनी तलवार से तुम्हारा सिर काट दूंगा."

आंद्रेई घर गया, बेंच पर बैठ गया और रोने लगा.

"तुम इतने उदास क्यों हो प्रिय हृदय?" त्सरेवना मारिया से पूछा. "क्या ऐसा कुछ हुआ है जिससे तुम्हें फिर से इतना दुःख हुआ है?"

"आह," आंद्रेई ने कहा, "तुम्हारा गोरा चेहरा मेरी बर्बादी होगी. ज़ार ने मुझे आदेश दिया है कि मैं नहीं जानता कि कहाँ जाऊँ और क्या लाऊँ, मुझे कुछ नहीं पता."

"अब यह वास्तव में एक कठिन काम है. लेकिन कोई बात नहीं, सो जाओ; रात सलाह की जननी होती है."

त्सरेवना मारिया ने आधी रात का इंतजार किया, और फिर उसने अपनी मंत्रों की किताब खोली. उसने उसे पूरा पढ़ा, फिर उसे एक तरफ फेंक दिया और अपना सिर पकड़ लिया: किताब ने उसे यह नहीं बताया कि ज़ार के कार्य को कैसे पूरा किया जाए. वह बाहर बरामदे में गई, उसने एक रुमाल निकाला और उसे लहराया, और देखो! सभी प्रकार के पक्षी झुंड में आ गए और सभी प्रकार के जानवर उसके पास दौड़े चले आए.

"जंगल के जानवरों और आसमान के पक्षियों की जय हो!" उसने कहा. "तुम जानवर हर जगह घूमते हो, तुम पक्षी हर जगह उड़ते हो - शायद तुम मुझे बता सकते हो कि कैसे जाना है, क्योंकि मुझे नहीं पता कि कहां जाना है और मुझे यह भी नहीं पता कि क्या लाना है?"

लेकिन पक्षियों और जानवरों ने उत्तर दिया: "नहीं, त्सरेवना मारिया, हम आपको यह नहीं बता सकते."

त्सरेवना मारिया ने फिर से अपना रूमाल लहराया, और पक्षी और जानवर ऐसे गायब हो गए जैसे वे कभी थे ही नहीं. उसने इसे तीसरी बार लहराया, और दो दिग्गज उसके सामने प्रकट हुए.

"तुम्हारी इच्छा क्या है? तुम्हारी इच्छा क्या है?"

"मेरे वफादार सेवकों, मुझे महासागर-समुद्र के बीच तक ले चलो."

दिग्गजों ने त्सरेवना मारिया को उठा लिया, उसे महासागर-समुद्र में ले गए और गहरे पानी के बीच में खड़ा कर दिया. वहाँ वे दो ऊँचे स्तंभों की तरह खड़े थे, उसे अपनी बाँहों में पकड़े हुए. त्सरेवना मारिया ने अपना रुमाल लहराया और समुद्र की सभी मछलियाँ और रेंगने वाली चीज़ें उसकी ओर तैरने लगीं.

"समुद्र की मछलियाँ और रेंगने वाली चीज़ें, आप हर जगह तैरते हैं और सभी द्वीपों को जानते हैं - शायद आप मुझे बता सकते हैं कि कैसे जाना है, मुझे नहीं पता कि कहाँ जाना है और मुझे नहीं पता कि क्या लाना है?"

"नहीं, त्सरेवना मारिया, हमने ऐसी जगह के बारे में कभी नहीं सुना है."

त्सरेवना मारिया दुखी हो गई और उसने दिग्गजों से उसे घर ले जाने के लिए कहा. और दिग्गज उसे आंद्रेई के घर ले गए और उसे दरवाजे पर खड़ा कर दिया.

अगली सुबह त्सरेवना मारिया आंद्रेई को उसकी यात्रा पर छोड़ने के लिए समय पर उठी और उसने उसे सूत की एक गेंद और एक कढ़ाई वाला तौलिया दिया.

"सूत की गेंद को अपने सामने फेंको और जहां भी वह लुढ़के, उसका पीछा करो." उसने कहा, "और तुम जहां भी हो, ध्यान रखना, नहाने के बाद अपने आप को किसी और तौलिये से नहीं, बल्कि उसी तौलिए से पोंछना जो मैंने तुम्हें दिया है."

आंद्रेई ने त्सरेवना मारिया को अलविदा कहा. वो चारों दिशाओं में झुका और फिर शहर के द्वार से बाहर चला गया. उसने सूत की गेंद को अपने सामने फेंका और गेंद के लुढ़कते ही उसके पीछे-पीछे चला.

कहानी बताने में छोटी है, लेकिन काम करने में लंबा है. आंद्रेई कई ज़ारडोम और अजीब भूमि से गुज़रा. गेंद लुढ़कती गई और जैसे-जैसे सूत खुलता गया, वह छोटी होती गई. जल्द ही गेंद एक मुर्गी के अंडे से बड़ी नहीं रही; और कुछ समय के बाद वो इतनी छोटी हो गई कि उसे सड़क पर देख पाना मुश्किल हो गया.

आंद्रेई एक जंगल में आया, उसने देखा, और उसके सामने मुर्गी के पैरों पर एक छोटी सी झोपड़ी थी.

"छोटी झोपड़ी, छोटी झोपड़ी, कृपया अपनी पीठ पेड़ों की ओर और अपना चेहरा मेरी ओर करो," आंद्रेई ने कहा.

झोंपड़ी घूम गई, आंद्रेई अंदर गया और देखा कि एक बूढ़ा खरगोश एक बेंच पर बैठा हुआ घूम रहा था.

"वाह रूसी खून, जो मुझे पहले कभी नहीं मिला, अब मुझे अपने दरवाजे से उसकी गंध आ रही है. यहां कौन आया है? कहां से? कहां जाएगा? मैं तुम्हें जिंदा भून डालूंगा, खा जाऊंगा और तुम्हारी हड्डियों पर कूदूंगा."

"आओ, आओ, बूढ़े बाबा-यागा, पहले पथिक को खाना दो!" आंद्रेई ने कहा. "एक पथिक दुबला और कठोर होता है और धूल से सलेटी होता है. पहले उसे स्नान गर्म करवाओ, मुझे भाप में नहाने दो, और फिर मुझे खाओ."

फिर बाबा-यागा ने स्नानघर को गर्म किया. आंद्रेई ने खुद को धोया और भाप ली और खुद को सुखाने के लिए अपनी पत्नी की तौलिया निकाली.

"तुम्हें वो तौलिया कैसे मिली?" बाबा-यागा ने पूछा. "मेरी बेटी ने इस पर कढ़ाई की है."

"आपकी बेटी मेरी पत्नी है. उसने ही मुझे यह तौलिया दी है."

"आह, स्वागत है, प्रिय दामाद जी, स्वागत है, और मुझे अपने साथ वह सर्वोत्तम व्यवहार करने दो जो मेरा घर तुम्हें दे सकता है!"

बाबा-यागा ने खुद को तैयार किया और मेज पर सभी प्रकार के भोजन, वाइन और अन्य अच्छी चीजें रखीं. आंद्रेई बिना किसी झिझक के बैठ गया, और बाबा-यागा उसके पास बैठ गया और उससे पूछा कि उसकी त्सरेवना मारिया से शादी कैसे हुई और क्या वे एक साथ खुश थे. और आंद्रेई ने उसे सब कुछ बता दिया, और यह भी नहीं जानता था कि ज़ार ने उसे क्यों भेजा था, वह नहीं जानता था कि उसे कहाँ से जाना था, वह यह भी नहीं जानता था कि उसे क्या लाना था.

"काश तुम मेरी मदद करती, माँ!" उसने कहा.

"आह, मेरे प्यारे दामाद, मैंने भी इतनी अजीब जगह के बारे में नहीं सुना है. ऐसी चीजों के बारे में जानने वाला एकमात्र व्यक्ति एक बूढ़ा मेंढक है, और वह पिछले तीन सौ वर्षों से दलदल में रह रहा है. लेकिन फ़िक्र मत करो, सो जाओ; क्योंकि रात सलाह की जननी होती है."

आंद्रेई बिस्तर पर लेट गया, और बाबा-यागा ने दो बर्च के झाड़ू लिए, दलदल में उड़ा और बुलाया:

"बूढ़ी मदर-हॉपर, क्या आप अभी भी जीवित हैं?"

"मैं हूँ."

"तो फिर दलदल से बाहर निकलो."

बूढ़ा मेंढक दलदल से बाहर निकला और बाबा-यागा ने कहा:

"क्या आपको पता है कि मैं नहीं जानता कि वो क्या है?"

"मुझे पता है."

"तो इतनी कृपा करें कि मुझे बताएं कि वह कहां है. मेरे दामाद को भेजा गया है, उसे नहीं पता कि कहां जाना है, उसे यह भी नहीं पता कि उसे क्या लाना है."

"मैं खुद उसे रास्ता दिखाऊंगी, लेकिन मैं बहुत बूढ़ी हूं, ओर वो एक लंबी दूरी है." मेंढक ने कहा, "तुम्हारा दामाद मुझे ताजे दूध के जग में डालकर धधकती नदी तक ले जाए. वहां मैं उसे बताऊंगी."

बाबा-यागा ने ओल्ड मदर-हॉपर को उठाया, घर के लिए उड़ान भरी, एक जग में कुछ ताजा दूध डाला और मेंढक को उसमें डाल दिया. अगली सुबह उसने आंद्रेई को जगाया.

"यहाँ एक जग है जिसमें मेंढक है," बाबा-यागा ने कहा. "तैयार हो जाओ, मेरे घोड़े पर बैठो और धधकती नदी पर जाओ. वहां तुम घोड़े को छोड़ देना और मेंढक को जग से बाहर निकालना. फिर वो तुम्हें बताएगी कि तुम्हें कहां जाना है."

आंद्रेई ने कपड़े पहने, जग लिया और बाबा-यागा के घोड़े पर चढ़ गया. कोई नहीं जानता कि वे सवारी बहुत देर तक करते रहे या थोड़ी देर तक, लेकिन आख़िरकार वे धधकती नदी पर आ पहुँचे. उस नदी के उस पार कोई जानवर कूद नहीं सकता था, कोई पक्षी उड़ नहीं सकता था. आंद्रेई घोड़े से उतर गया, और मेंढक ने कहा:

"मुझे जग से बाहर निकालो, मेरे सुन्दर लड़के. हमें नदी पार करनी होगी."

आंद्रेई ने मेंढक को जग से बाहर निकाला और जमीन पर बिठा दिया.

"अब मेरी पीठ पर चढ़ जाओ."

"ओह, लेकिन तुम बहुत छोटी हो, मदर-हॉपर, मैं तुम्हें कुचल डालूँगा."

"डरो मत. आगे बढ़ो और मुझे मजबूती से पकड़ो."

आंद्रेई, ओल्ड मदर-हॉपर पर बैठ गया और वह फूलने लगी. वह फूली और वह तब तक फूली जब तक वह एक घास के मुर्गे जितनी बड़ी नहीं हो गई.

"क्या तुम मजबूती से पकड़े हुए हो?" उसने पूछा.

"हाँ माँ."

ओल्ड मदर-हॉपर फ़ूली और फिर से फ़ूली जब तक कि वह एक बड़े जानवर जितनी बड़ी नहीं हो गई.

"क्या तुम मजबूती से पकड़े हुए हो?"

"हाँ माँ."

वह फिर फूली और फूली, यहां तक कि वह अंधेरे जंगल से भी ऊंची हो गई. फिर एक ही छलांग में वह धड़कती नदी के पार पहुँच गई. उसने आंद्रेई को दूसरी तरफ बिठा दिया और वो फिर से छोटी बन गई.

"उस पथ का अनुसरण करो, मेरे अच्छे सुंदर लड़के, और तुम्हें एक मीनार दिखाई देगी जो न तो पूरी तरह से मीनार है, न ही पूरी तरह से झोपड़ी है, न ही खलिहान है, लेकिन उसमें प्रत्येक का थोड़ा सा हिस्सा है. अंदर जाओ और चूल्हे के पीछे खड़े हो जाओ. वहाँ मुझे पता नहीं तुम्हें क्या मिलेगा."

आंद्रेई रास्ते से नीचे चला गया और एक पुरानी झोपड़ी देखी जो बिल्कुल झोपड़ी नहीं थी. इसमें कोई खिड़कियाँ या बरामदा नहीं था, लेकिन यह एक महल से घिरा हुआ था. वह जाकर चूल्हे के पीछे छिप गया.

धीरे-धीरे जंगल में कोलाहल और शोर मचने लगा, और एक बहुत तेज़ और फुर्तीला, अंगूठे के आकार का एक छोटा दाढ़ी वाला आदमी अंदर आया और चिल्लाया:
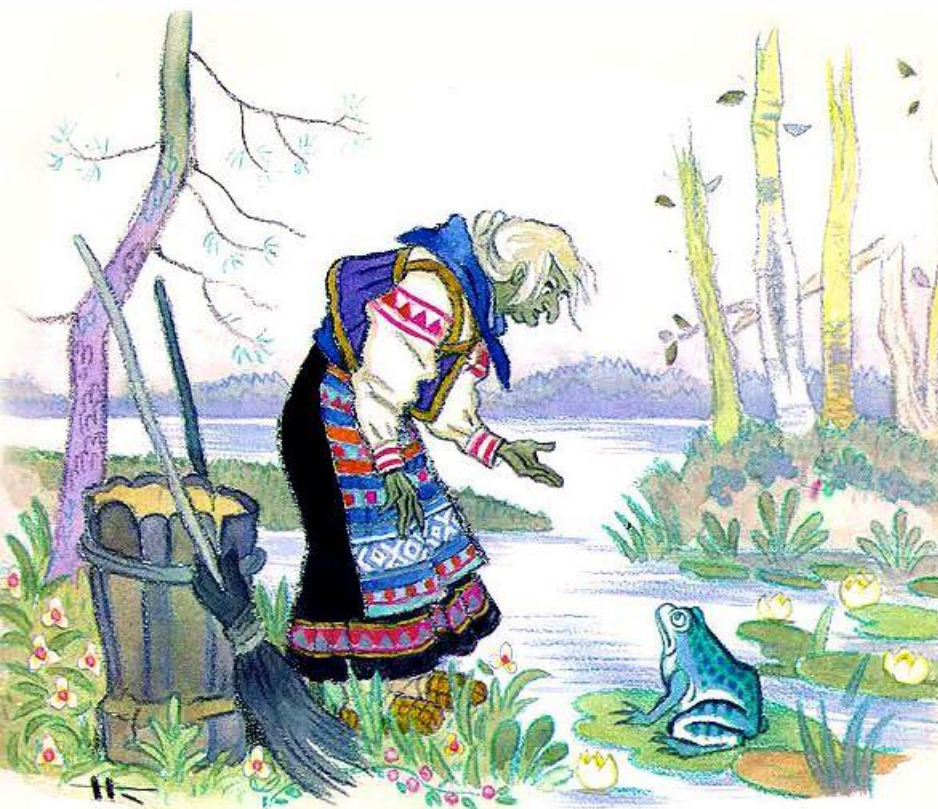
"देखो, भाई नाओम, मुझे भूख लगी है!"

जब देखते ही देखते उसके मुंह से बमुश्किल ही शब्द निकले! एक मेज ऐसी दिखाई दी मानो हवा से बनी हो, और मेज पर बीयर का एक बैरल रखा हुआ था, बहुत हल्का और साफ, और एक भुना हुआ बैल जिसमें चाकू फंसा हुआ था. तेज-तर्रार और अंगूठे के आकार का व्यक्ति बैल के सामने बैठ गया, उसने तेज चाकू निकाला और मांस काटना शुरू कर दिया, उस पर लहसुन छिड़का और उसे बड़े चाव से खाया, जब उसने भोजन खाया तो उसकी प्रशंसा की.

उसने बैल का एक-एक टुकड़ा खा लिया और फिर वो बियर का पूरा बैरल पी गया.

"भाई नाओम, मेज साफ़ करो!"

और एक ही बार में मेज गायब हो गई जैसे कि वह वहां कभी थी ही नहीं, हड्डियां, बैरल और सब कुछ. आंद्रेई ने छोटे बौने के चले जाने तक इंतजार किया, फिर वह चूल्हे के पीछे से बाहर आया, साहस जुटाया और वो चिल्लाया:

"भाई नाओम, मुझे कुछ खाने को दो!"

उसके मुंह से बमुश्किल ही शब्द निकले वैसे ही देखते ही देखते एक मेज़ ऐसी दिखाई दी मानो हवा से बनी हो, और उस पर हर तरह का खाना, शराब और दूसरी अच्छी चीज़ें रखी थीं.

आंद्रेई मेज पर बैठ गया और कहा:

"बैठो नाओम भाई, चलो साथ मिलकर खाते-पीते हैं."

और एक अदृश्य आवाज़ ने उत्तर दिया:

"आपकी दयालुता के लिए धन्यवाद, मेरे मित्र. कई वर्षों तक मैंने यहां सेवा की है, फिर भी मुझे कभी जली हुई पपड़ी के बराबर भी कुछ नहीं दिया गया, जबकि आप मुझे अपनी मेज पर बैठने के लिए कह रहे हैं."

आंद्रेई ने देखा और वो आश्चर्य से गूंगा हो गया. वहाँ कोई दिखाई नहीं दे रहा था, फिर भी भोजन ऐसे गायब हो गया मानो झाड़ू से साफ कर दिया गया हो; वाइन खुद-ब-खुद गिलासों में उड़ेलने लगी और गिलास मेज पर थिरकने लगे.

"भाई नाओम, मुझे तुम्हें देखना है!" आंद्रेई ने कहा.

"नहीं, मैं किसी को दिखाई नहीं देता हूँ. मैं नहीं जानता कि मैं क्या हूँ."

"भाई नाओम, क्या आप मेरी सेवा करेंगे?"

"वास्तव में मैं ऐसा करूंगा. क्योंकि आप एक अच्छे और दयालु व्यक्ति हैं."

जब उन्होंने खाना ख़त्म किया, तो आंद्रेई ने कहा:

"टेबल साफ़ करो और मेरे साथ आओ."

वह झोंपड़ी से बाहर निकला और उसने चारों ओर देखा.

"क्या आप यहाँ हैं, भाई नाओम?"

"हाँ. डरो मत, मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूँगा."

धीरे-धीरे आंद्रेई धधकती नदी पर आ गया, जहां मेंढक उसका इंतजार कर रहा था.

"ठीक है, मेरे सुन्दर लड़के," मेंढक ने कहा, "क्या तुम्हें पता चला कि मैं क्या जानता हूँ?"

"हाँ, मदर-हॉपर."

"मेरी पीठ पर बैठो."

आंद्रेई फिर से उसकी पीठ पर चढ़ गया और मेंढक ने खुद को फुलाना शुरू कर दिया, जब तक कि वह बहुत बड़ा नहीं हो गया, और फिर उसने एक छलांग लगाई और उसे धधकती नदी के पार ले गई.

आंद्रेई ने मदर-हॉपर को धन्यवाद दिया और घर की ओर प्रस्थान किया. वह थोड़ा आगे बढ़ता, फिर मुड़ता और पूछता:

"क्या आप यहाँ हैं, भाई नाओम?"
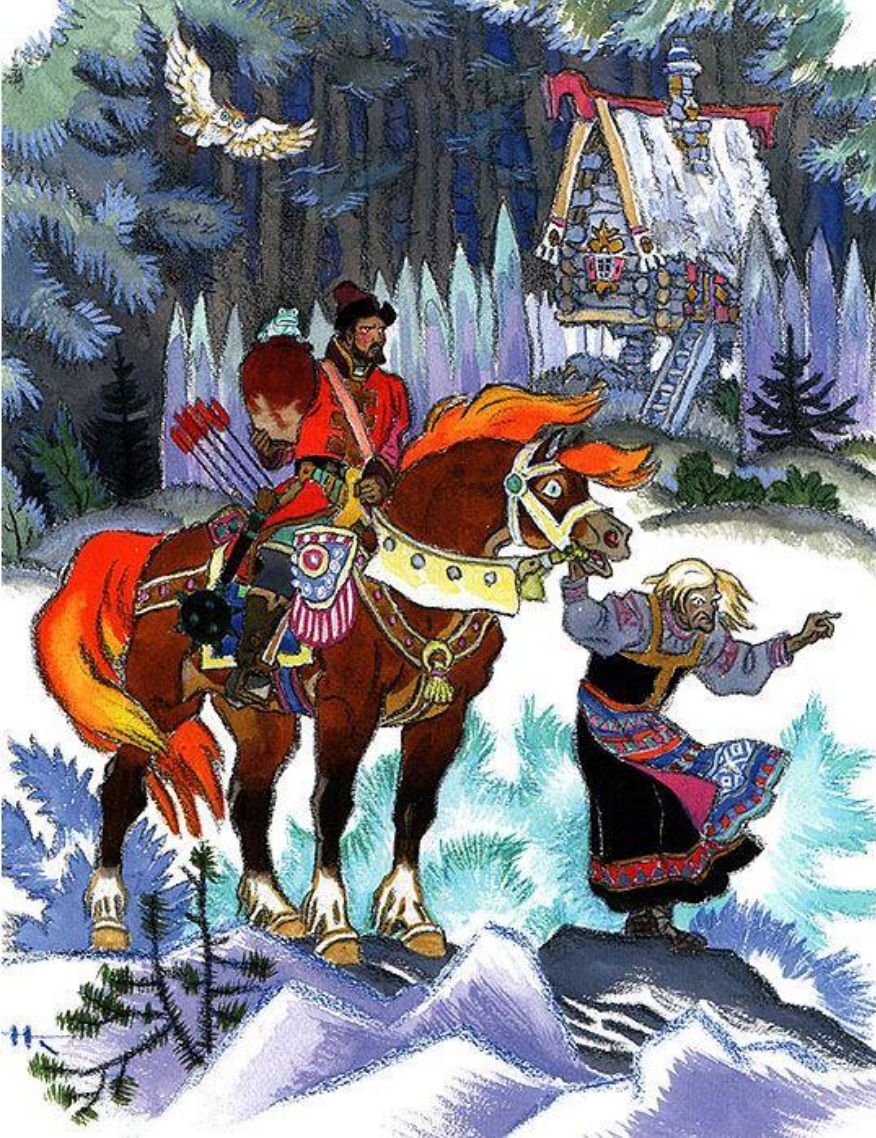
"हाँ. डरो मत, मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूँगा."

आंद्रेई चलता रहा और चलता रहा, और आख़िरकार वह थक गया और उसके पैरों में दर्द होने लगा.

"हे भगवान," उसने कहा, "मैं कितना थक गया हूँ!"

“तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?” भाई नाओम ने कहा. "मैं तुम्हें कुछ ही समय में घर पहुंचा सकता था."

और तुरंत आंद्रेई हवा के एक भयंकर झोंके में फंस गया और पहाड़ों और जंगलों, कस्बों और गांवों पर उड़ गया. वे गहरे समुद्र के ऊपर से उड़ गए, और उससे आंद्रेई डर गया.

"भाई नाओम, मुझे अब कुछ आराम करना चाहिए," उसने कहा.

हवा एकदम से धीमी हो गई और आंद्रेई समुद्र में गिरने लगा. लेकिन जहां केवल नीली लहरें ही छींटे मार रही थीं. फिर उसे एक द्वीप दिखाई दिया, और उस द्वीप पर एक सुनहरी छत वाला एक महल और उसके चारों ओर एक सुंदर बगीचा था.

भाई नाओम ने आंद्रेई से कहा:

"यहाँ आराम करो, खाओ, पीओ, और समुद्र पर नजर रखो. तीन व्यापारिक जहाज यात्रा करते हुए आएंगे. उनकी जय हो, व्यापारियों को रात्रिभोज पर आमंत्रित करो और उन्हें शाही ढंग से दावत दो - उनके पास तीन चमत्कार हैं. उन चमत्कारों के लिए मुझे बदले मे दे दो - डरो मत, मैं फिर तुम्हारे पास वापिस आऊंगा.”

कितना समय बीता बहुत या थोड़ा, कोई नहीं जानता, लेकिन आख़िरकार पश्चिम से तीन जहाज़ आये. नाविकों ने द्वीप देखा, और उस पर सुनहरी छत वाला महल और उसके चारों ओर सुंदर बगीचा देखा.

"यह कैसा आश्चर्य है?" उन्होंने कहा. "कई बार हमने यहां नौकायन किया है, और हमने कभी नीली लहरों के अलावा कुछ भी नहीं देखा है. चलो किनारे पर चलते हैं!"

तीन जहाजों ने लंगर डाला, और तीन व्यापारी एक हल्की नाव में सवार हो गए और द्वीप के लिए चल पड़े. और आंद्रेई तीरंदाज किनारे पर तैयार था और स्वागत करने के लिए उनका इंतजार कर रहा था.

"आपका स्वागत है, प्रिय अतिथियों," उसने कहा.

व्यापारियों ने जितना अधिक देखा, उनका आश्चर्य उतना ही अधिक बढ़ता गया. महल की छत आग की तरह चमक रही थी, पक्षी पेड़ों पर गाना गा रहे थे और अजीब जानवर रास्तों पर घूम रहे थे.

"हमें बताओ, हमारे अच्छे आदमी, यहाँ चमत्कारों का यह आश्चर्य किसने बनाया है?" व्यापारियों ने पूछा.

"मेरे नौकर, भाई नाओम ने इसे एक ही रात में इसे बनाया है," आंद्रेई ने उत्तर दिया.

वह मेहमानों को बैंक्वेट हॉल में ले गया और कहा: "भाई नाओम, हमें कुछ खाने-पीने को दो!"

अचानक - देखते ही देखते - एक मेज ऐसी दिखाई दी मानो हवा से बनी हो, वह सभी खाद्य पदार्थ और वाइन से भरी हुई थी. व्यापारियों ने देखा, और उनके आश्चर्य और प्रसन्नता का कोई अंत नहीं रहा.

"आइए, अब हम कुछ लेन-देन करें, अच्छे आदमी," व्यापारियों ने कहा, "आप हमें अपना नौकर भाई नाओम दे दो, और बदले में हमसे जो भी चमत्कार चाहो ले लो."

"बहुत अच्छा. आप क्या चमत्कार पेश कर सकते हैं?"

पहले व्यापारी ने अपने कोट के नीचे से एक छड़ी निकाली. किसी को बस इतना ही कहना था: "अब, गधे, उस आदमी को पटक दो!" और डंडा काम करना शुरू कर देगा और, चाहे वह कितना भी ताकतवर क्यों न हो, उस आदमी को बुरी तरह पीट देगा.

दूसरे व्यापारी ने अपने काफ्तान के नीचे से एक कुल्हाड़ी निकाली और उसे उसके हत्थे पर खड़ा कर दिया, और कुल्हाड़ी काटने लगी. रैप, टैप-आउट एक जहाज आया; रैप, टैप-आउट एक जहाज और आया, सभी जहाज़ पाल, बंदूकों और बहादुर नाविकों से परिपूर्ण थे. जहाज चल रहे थे, बंदूकें चल रही थीं और बहादुर नाविक आदेश माँग रहे थे.

उसने कुल्हाड़ी को उल्टा कर दिया, और देखो! जहाज ऐसे गायब हो गए जैसे वे कभी थे ही नहीं.

तीसरे व्यापारी ने अपनी जेब से एक रीड पाइप निकाला और उस पर फूंक मार दी. और देखो! एक सेना, घुड़सवार और पैदल, राइफलों और तोपों के साथ प्रकट हुई. सेना ने मार्च किया, बैंड बजाए गए, बैनर लहराए गए, और घुड़सवार सरपट दौड़े और आदेश मांगने लगे.

फिर व्यापारी ने पाइप के दूसरे सिरे में फूंक मार दी और तुरंत सब कुछ गायब हो गया.

"मुझे आपके चमत्कार पसंद हैं," आंद्रेई तीरंदाज़ ने कहा, "लेकिन मेरा नौकर इससे अधिक मूल्यवान है. यदि आप चाहें, तो मैं आपके तीनों चमत्कारों के बदले में भाई नाओम को दे दूंगा."

"क्या आप बहुत ज़्यादा नहीं मांग रहे हैं?"

"कृपया सोचें. आपको सौदा मंज़ूर है या नहीं, मुझे बताएं."

व्यापारियों ने इस पर विचार किया.

"हमें अपनी लाठी, कुल्हाड़ी और पाइप का क्या चाहिए?" उन्होंने कहा. "बेहतर होगा कि हम उन्हें भाई नाओम से बदल लें; तब हमें वह सब कुछ मिलेगा जो हम खाना-पीना चाहते हैं, रात हो या दिन, बिना उंगली उठाए."

इसलिए व्यापारियों ने आंद्रेई को लाठी, कुल्हाड़ी और पाइप दे दिए, और चिल्लाए:

"सुनो भाई नाओम, आप हमारे साथ आ रहे हैं! क्या आप सच्ची सेवा करेंगे?"

"क्यों नहीं?" एक आवाज आई. "मेरे लिए आप सब एक जैसे है मैं सबकी सेवा करूंगा."

इसलिए व्यापारी अपने जहाजों पर वापस चले गए और दावत और आनंद करने लगे. उन्होंने खाया-पीया, और चिल्लाते रहे:

"भाई नाओम, हमारे लिए यह लाओ, भाई नाओम, हमारे लिए वह लाओ!"

उन्होंने तब तक शराब पी जब तक वे नशे में धुत्त नहीं हो गए और जहां वे बैठे थे वहीं सो गए.

और तीरंदाज़ महल में अकेला बैठा रहा और बहुत दुखी और दुखी महसूस करने लगा.

"प्रिय," उसने सोचा, "मुझे आश्चर्य है कि मेरा वफादार सेवक, भाई नाओम, कहाँ है."

"मैं यहाँ पर ही हूँ. आप क्या चाहते हैं?"

आंद्रेई बहुत खुश हुआ.

"क्या यह घर जाने का समय नहीं है, अपनी युवा पत्नी के पास वापस जाने का? मुझे घर ले चलो, भाई नाओम."

और, पहले की तरह, हवा के एक झोंके ने उसे पकड़ लिया और उसे उसके देश में ले गया.

अब व्यापारी जाग गये, उन्हें बीमार और प्यास लग रही थी.

"सुनो, भाई नाओम!" वे चिल्लाए. "हमें खाने-पीने के लिए कुछ दो, और सक्रिय रहो!"

वे बहुत देर तक चिल्लाते रहे, लेकिन सब व्यर्थ में गया. उन्होंने देखा, और देखो! द्वीप ख़त्म हो गया था. जहां वे खड़े थे वहां केवल नीली लहरें छलक रही थीं.

फिर व्यापारियों को गुस्सा आया.

"कितना बुरा आदमी है उसने हमें इतना धोखा दिया!" उन्होंने कहा.

लेकिन वे इसके बारे में कुछ नहीं कर सकते थे, इसलिए उन्होंने लंगर उठाया और जहां भी वे जा रहे थे, वहां चले गए.

इस बीच आंद्रेई तीरंदाज घर चला गया और अपनी झोपड़ी के पास उतर गया. लेकिन जहां उसकी झोपड़ी थी वहां अब जली हुई चिमनी के अलावा और कुछ नहीं बचा था.

आंद्रेई ने अपना सिर लटका लिया और नीले समुद्र के किनारे एक सुनसान जगह पर चला गया. और वह वहाँ बैठा हुआ शोक मना रहा था कि अचानक एक नीला-कबूतर कहीं से उड़ता हुआ आया. वह ज़मीन से टकराया और उसकी युवा पत्नी, त्सरेवना मारिया में बदल गया.

वे गले मिले और एक-दूसरे से सवाल पूछने लगे और एक-दूसरे को वह सब बताने लगे जो उनके साथ क्या हुआ था.

"जब से तुमने घर छोड़ा है मैं कबूतर के भेष में जंगल और उपवनों में उड़ रही हूँ," त्सरेवना मारिया ने कहा. "ज़ार ने मुझे तीन बार बुलाया, लेकिन मैं उससे नहीं मिली और इसलिए उसने हमारी झोपड़ी जला दी."

"भाई नाओम, क्या आप नीले समुद्र के किनारे एक महल बना सकते हैं?" आंद्रेई ने पूछा.

"क्यों नहीं? यह काम पलक झपकते ही हो जाएगा."

और यह सच है, इससे पहले कि वे चारों ओर देखते, महल तैयार था, और वो एक भव्य महल था, जो ज़ार के महल से कहीं बेहतर था. वह एक बड़े हरे बगीचे में खड़ा था और पक्षी पेड़ों पर गाते थे और सभी प्रकार के अजीब जानवर रास्तों पर घूमते थे.

आंद्रेई तीरंदाज और त्सरेवना मारिया महल में दाखिल हुए, खिड़की के पास बैठ गए और बातें करने लगे, कुछ देर तक एक-दूसरे को प्यार से देखते रहे. और इस प्रकार वे संसार की परवाह किए बिना एक दिन, दूसरे दिन, और तीसरे दिन तक जीवित रहे.

तभी ज़ार शिकार करने निकला और उसने नीले समुद्र के किनारे एक महल खड़ा देखा जहाँ पहले कुछ भी नहीं खड़ा था.

"मेरी इजाजत के बिना मेरी जमीन पर यह महल किसने बनाया?" उसने पूछा.

ज़ार के दूत भागे, और जब वे वापस आये तो उन्होंने कहा कि आंद्रेई तीरंदाज़ ने महल बनाया है और वह अपनी युवा पत्नी त्सरेवना मारिया के साथ उसमें रहता है.

ज़ार पहले से कहीं अधिक क्रोधित हुआ, और उसने यह पता लगाने के लिए दूत भेजे कि क्या आंद्रेई मुझे नहीं पता कि कहाँ गया था और मुझे नहीं पता कि क्या लाया था.

दूत फिर से दौड़े, और जब वे वापस आये तो उन्होंने बताया कि आंद्रेई तीरंदाज़ सचमुच न जाने कहाँ गया था और न जाने क्या लाया था.

इससे ज़ार अत्यधिक क्रोधित हो गया. उसने अपने सैनिकों को इकट्ठा किया और समुद्र में युद्ध के लिए भेज दिया, और आदेश दिया कि महल को ज़मीन पर गिरा दिया जाए और आंद्रेई तीरंदाज़ और त्सरेवना मारिया को क्रूर मौत दी जाए.

आंद्रेई ने देखा कि कितनी शक्तिशाली सेना उसके खिलाफ आ रही है, इसलिए उसने अपनी कुल्हाड़ी निकाली और उसे उसके हैंडल पर रख दिया. रैप, टैप, कुल्हाड़ी चली, और एक जहाज समुद्र पर खड़ा था; रैप, टैप, और वहाँ एक और जहाज था. नीले समुद्र पर सौ जहाज चलने तक कुल्हाड़ी सौ बार चली.

आंद्रेई ने अपना पाइप निकाला और उस पर फूंक मारी - और एक सेना घुड़सवार और पैदल, राइफलों, तोपों और उड़ते बैनरों के साथ प्रकट हुई.

कप्तान सरपट दौड़ पड़े और आदेश की प्रतीक्षा करने लगे और आंद्रेई ने उन्हें युद्ध शुरू करने का आदेश दिया. बैंड बजने लगे, ड्रम बजने लगे और रेजिमेंट हमले के लिए आगे बढ़ीं. पैदल सैनिकों ने ज़ार की सेना की कमान को तोड़ दिया, और घुड़सवार कैदियों को पकड़ने के लिए सरपट दौड़ पड़े. और सौ जहाजों के बेड़े ने ज़ार के शहर पर अपनी तोप चला दी.

जब ज़ार ने अपने सैनिकों को भागते देखा, तो वह उन्हें रोकने के लिए दौड़ा. इस पर आंद्रेई ने अपना गुस्सा निकाला.

"ज़ार की हड्डियाँ तोड़ दो!"

और वह उछल-कूद कर मैदान के उस पार चला गया. उसने ज़ार को पकड़ लिया और उसके माथे पर प्रहार किया और वह वहीं मरकर गिर पड़ा.

और वह लड़ाई का अंत था. लोग शहर से बाहर निकल आए और उन्होंने आंद्रेई तीरंदाज़ से आग्रह किया कि वह राज्य का शासन अपने हाथों में ले ले.

इस पर आंद्रेई सहमत हो गया. उसने एक भव्य दावत दी, जैसी दुनिया ने पहले कभी नहीं देखी थी, और त्सरेवना मारिया के साथ मिलकर उन्होंने अपने दिनों के अंत तक राज्य पर शासन किया.